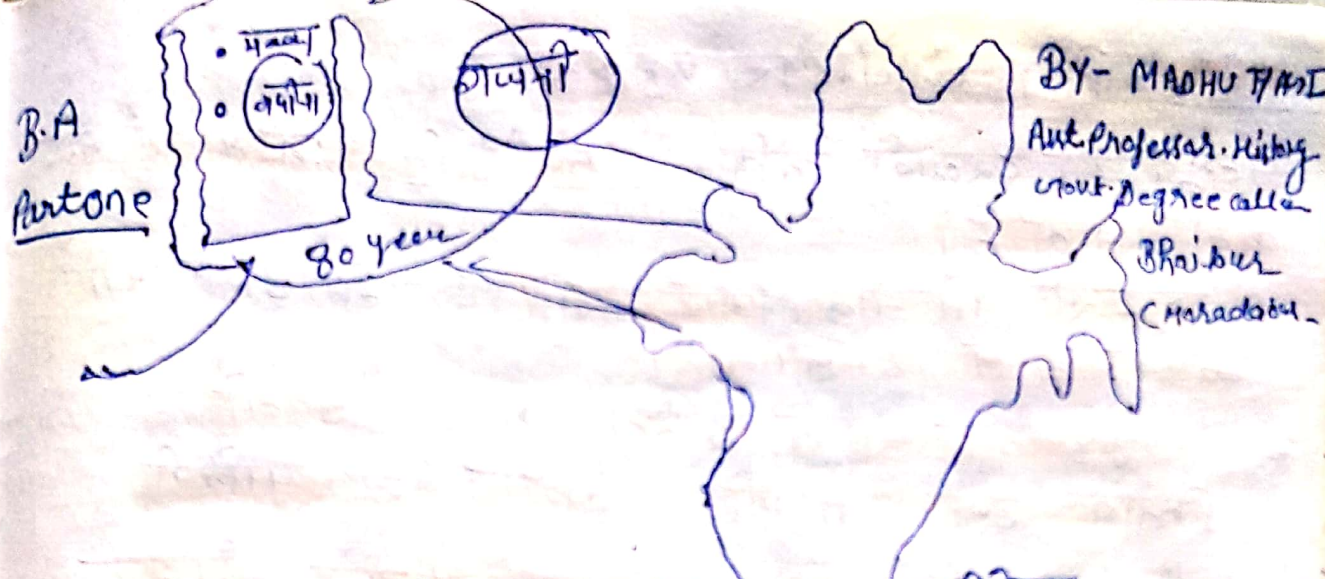

B.A
Part one

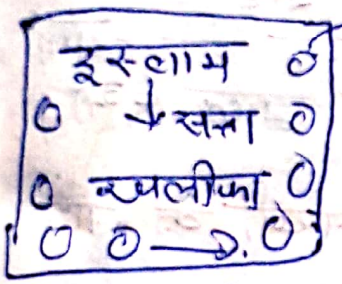

BY- MADHU TYAGI
Asst. Professor. History
Govt. Degree College
Bhaibur
(Moradabad)

=) महमूद गजनवी महत्वकांक्षी कुलीतिस दूरदर्शी • प्रतिभा था।

इस्लाम ↓ सत्ता	गवर्नर
खलीफा	

=) गजनी वंश का संस्थापक अल्पतगीन था।

=) सबुक्तगीन के काल में हिन्दुशाही वंश का तुर्क सेना के साथ मुकाबला।

=) महमूद ऐसा पहला शासक है। जिसने पहली बार सुल्तान की उपाधि प्रदान की।

=) महमूद का भारत पर आक्रमण विशुद्ध रूप से धन प्राप्त करना था।

1005 मुल्तान पर आक्रमण

1011,12 थानेश्वर

1015,16 कश्मीर असफल

1018 , कन्नौज और मथुरा

1021,22, पंजाब क्षेत्र पर नियन्त्रण स्थापित किया

=) इसने घुड़सवार व नंदी आकृति के सिक्के चलाये

=) दिल्लीवाल सिक्के महमूद गजनवी ने चलाये।

=) 1025 सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण

Scanned with CamScanner

1027 अन्तिम जाटों पर आक्रमण

महमूद का दरबारी कवि - फिरदौसी पूर्व का होमर कहा जाता है।

1) फारसी की नींव फिरदौसी ने ही डाली थी अपने ग्रन्थ शाहनामा में

2) महमूद का शाही इतिहासकार - उत्बी
किताब - उल यामिनी - तारीख - ए - यामिनी

3) महमूद के भारत पर आक्रमण को जेहाद नाम उत्बी ने दिया।

4) महमूद ने जब 1017 में ख्वारिज्म शाह की स्थापना यहीं से उसे अलबेरूनी यहीं से प्राप्त हुआ।

5) कन्नौज आक्रमण के साथ महमूद गजनवी के साथ अलबेरूनी भारत आया।

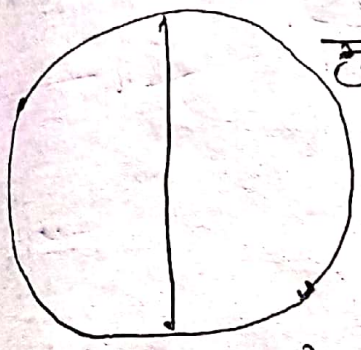

- पहली इक्ता गौरी ने दी यह दायित्व नहीं देगा।
- ऐबक ने दायित्व प्रदान नहीं किये
- इल्तुतमिश ने प्रथम बार दायित्व दिये।

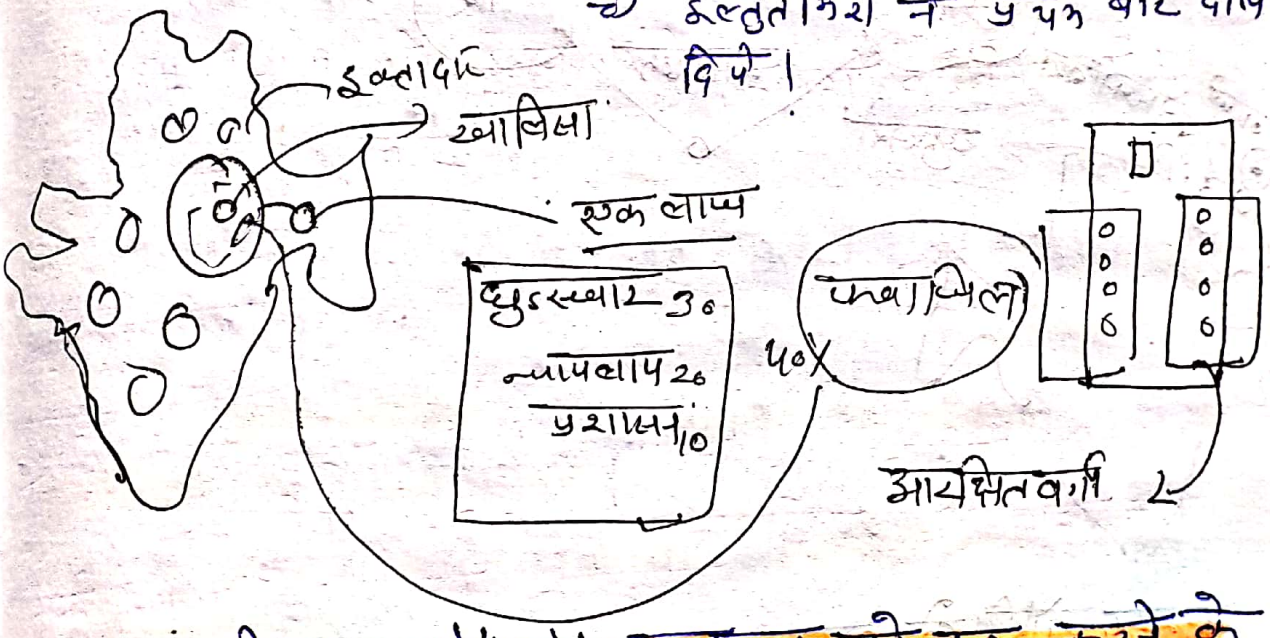

- बलबन ने इक्ताओं में भ्रष्टाचार को कम करने के लिए ख्वाजा नाम का पद गठित किया गया।
- अलाउद्दीन खिलजी के काल में खालिसा पर अत्यधिक जोर

Scanned with CamScanner

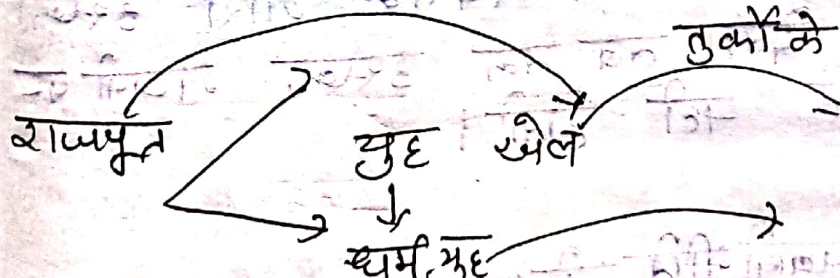

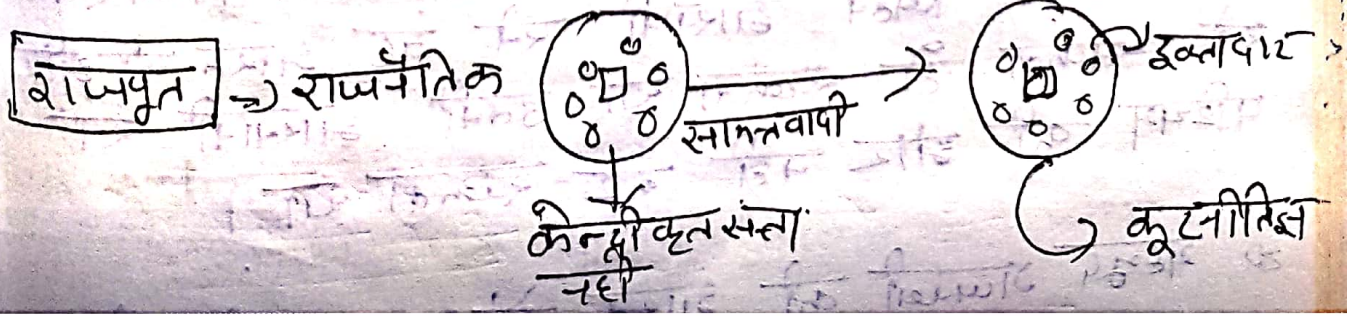

युद्ध पद्धति में

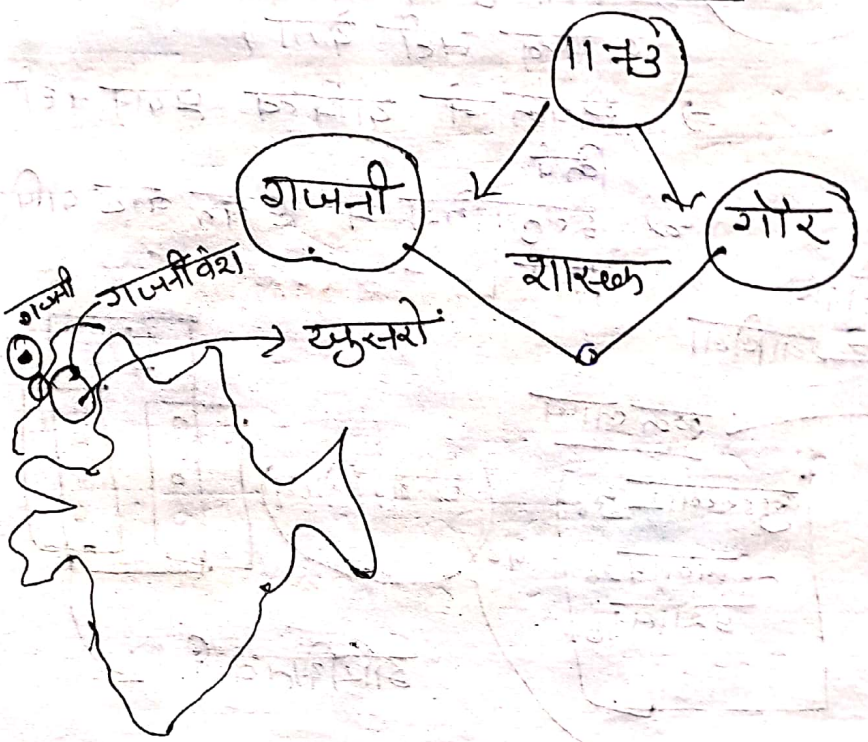

तुर्कों के साथ
0 0 0 घोड़े
अचूक निशाने मारते थे।

मुहम्मद गौरी

मुहम्मद गौरी के भारत पर आक्रमण करने के मुख्य कारण

→ पंजाब में गजनी वंश का अन्तिम शासक खुसरो शासन चला रहा था। और जब तक गौरी उसका दमन नहीं कर देता तब तक उसका गजनी पर पूर्ण वैधता प्राप्त नहीं होती।

2) गौरी साम्राज्यवादी नीति के तहत राज्य विस्तार चाहता था और जितने आसानी से वह भारत की ओर से सफल हो सकता था उतनी आसानी से पश्चिम की ओर नहीं कर सकता था।

3) महमूद गजनवी की भारत में सफलताओं ने भारत की ओर बढ़ने पर आकर्षित कर दिया।

- 1175 में मुल्तान पर आक्रमण
- 1178 में मुहम्मद गोरी को भीम II ने हराया अन्हिलवाड़ गुजरात के शासक भीम II या मूलराज ने हरा दिया।
- 1186 खुसरो वंश के अन्तिम शासक का दमन कर दिया।
- तराइन का युद्ध 1191 → मुहम्मद गोरी व पृथ्वीराज चौहान
- तराइन का द्वितीय युद्ध 1192 → जीत गोरी की होगी।
- इसी के काल में भारत में मुस्लिम समाज की नींव पड़ गयी।
- 1194 ई० चन्दावर का युद्ध कन्नौज के शासक जयचन्द और गोरी के बीच।

Note :- गोरी के अधीन बंगाल, बिहार विजित किया था बख्तियार खिलजी।

- राजपूताना का जो क्षेत्र था वह विजित किया कुतुबुद्दीन ऐबक ने किया।
- 1206 में गोरी की मृत्यु हो गयी।

दिल्ली सल्तनत :-

गुलाम वंश (1206 – 1290)

- कुतुबी वंश (1206-1210)
- इल्बारी (1210-1266)
- बलबनी वंश (1266-1290)

- दिल्ली सल्तनत का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक
- दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक इल्तुतमिश इतिहासकार A.P त्रिपाठी के अनुसार

Scanned with CamScanner

कुतबुद्दीन ऐबक (1206-1210)

1) दिल्ली सल्तनत प्रकृति एक इस्लामी राज्य नहीं थी। क्योंकि इस्लामी राज्य में शासक और शासित दोनों एक धर्म को मानने वाले होते हैं। लेकिन दिल्ली सल्तनत में गैर मुस्लिमों को जिम्मी का दर्जा देकर उन्हें राज्य में सुरक्षा कर (जजिया कर) के बदले राज्य में रहने का अवसर दिया गया। लेकिन यह भी सत्य है कि दिल्ली सल्तनत में इस्लामी तत्वों की प्रधानता हुई।

2) दिल्ली सल्तनत अपनी स्थापना से लेकर इसके पतन तक की अवधि में कुछ मूलभूत समस्याओं का Solvation नहीं निकाल पायी। अपितु कुछ समस्याओं में तनाव आरम्भ से ही बना रहा और फिर समय के साथ ये तनाव बढ़ता चला गया। कुछ शासक अपनी कुटनीति इन नीतियों के तहत इन समस्याओं को कुछ सीमा तक नियन्त्रित कर सके। तो कुछ शासकों की नीतियों ने इस खाई को और चौड़ा किया अतः R.S.T को विरासत में इसी प्रकार की सल्तनत मिली थी। जोकि सम्भवतः किसी एक शासक की नीतियों से पड़ी दरार कम नहीं हो सकती थी। अतः यही तनाव दिल्ली सल्तनत के पतन के मुख्य कारण बन गये।

~~सुल्तान~~ सुल्तान एवम कुलीन वर्ग।

(2) सुल्तान एवम उलेमा वर्ग।

(3) तुर्की मुस्लिम और गैर तुर्की समाज

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 - 1210) कुरान बख्श, लाखबख्श

- कुवतउल इस्लाम मस्जिद - कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली तुर्कों द्वारा बनायी गयी पहली इमारत
- अढ़ाई दिन का झोपड़ा - अजमेर (मस्जिद)
- कुतुबमीनार निर्माण कार्य (ऐबक) पूरी करायी इल्तुतमिश ने। M.G की भारत विजय के प्रतीक के रूप में कुतुबद्दीन बख्तियार काकी इस इमारत का नामकरण हुआ।
- F.S.T के काल में इसे पांच मंजली कर दिया गया।
- कुतुबुद्दीन ऐबक की राजधानी लाहौर थी।
- कुतुबुद्दीन ऐबक को काबुल बुलाया गया व वहाँ की सत्ता ग्रहण की लेकिन ये वहाँ व्यवस्था स्थापित नहीं कर सका और इसीलिए इसे वहाँ से वापस आना पड़ा।
- यह एक अच्छा सेनानायक था लेकिन यह एक अच्छा प्रशासक नहीं था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक के बाद आरामशाह गद्दी पर बैठा।
- आरामशाह योग्य शासक नहीं था अतः राज्य में अव्यवस्था फैल गयी। इस पर दिल्ली के अमीरों ने बदायूँ के इक्तादार इल्तुतमिश को सुल्तान पद के लिए निमंत्रण किया। जिसे इल्तुतमिश ने स्वीकार कर लिया। और इस प्रकार दिल्ली का पहला शासक इल्तुतमिश था।

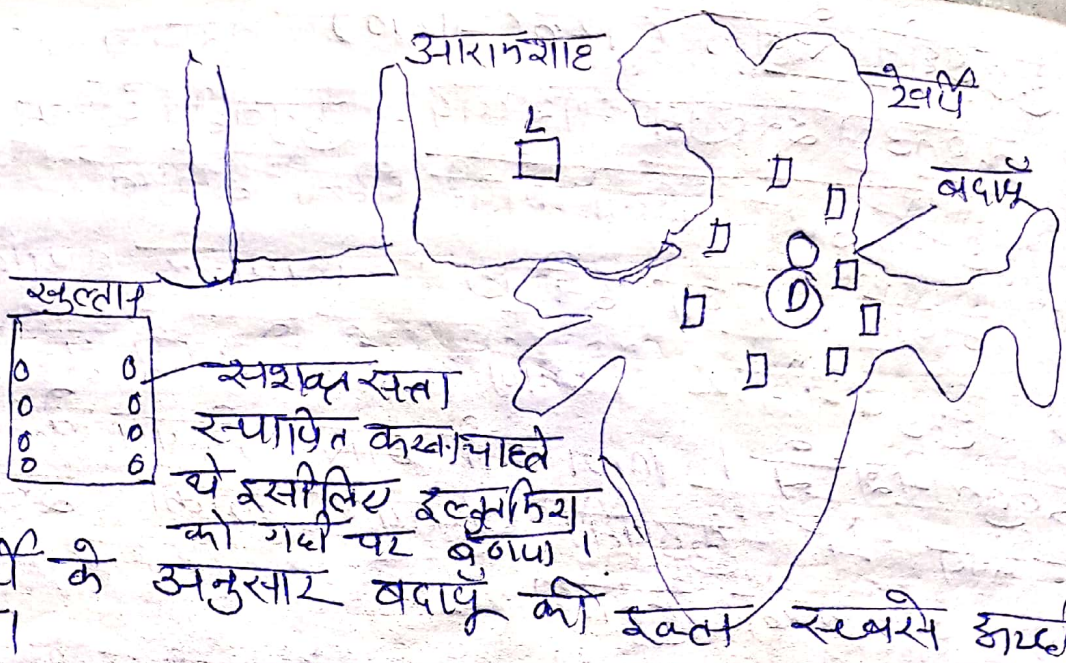

सशक्त सत्ता स्थापित करना चाहते थे इसीलिए इल्तुतमिश को गद्दी पर बैठाया।

⇒ रेवर्टी के अनुसार बदायूं की इक्ता सबसे अच्छी थी।

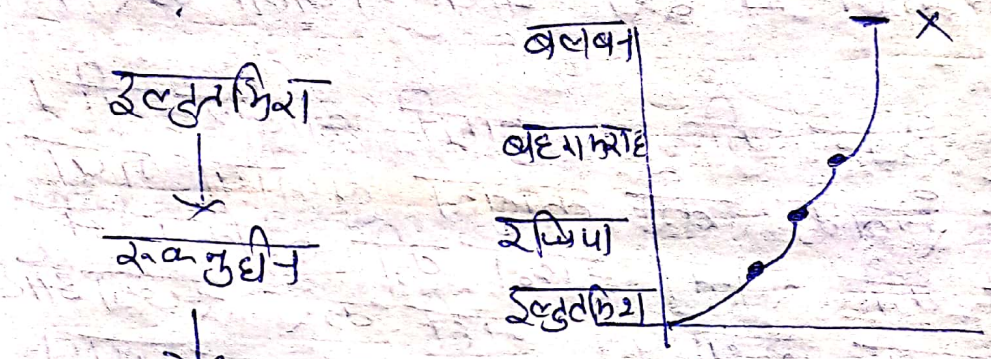

इल्तुतमिश
↓
रुकनुद्दीन
↓
रजिया
↓
(शून्य) बहरामशाह

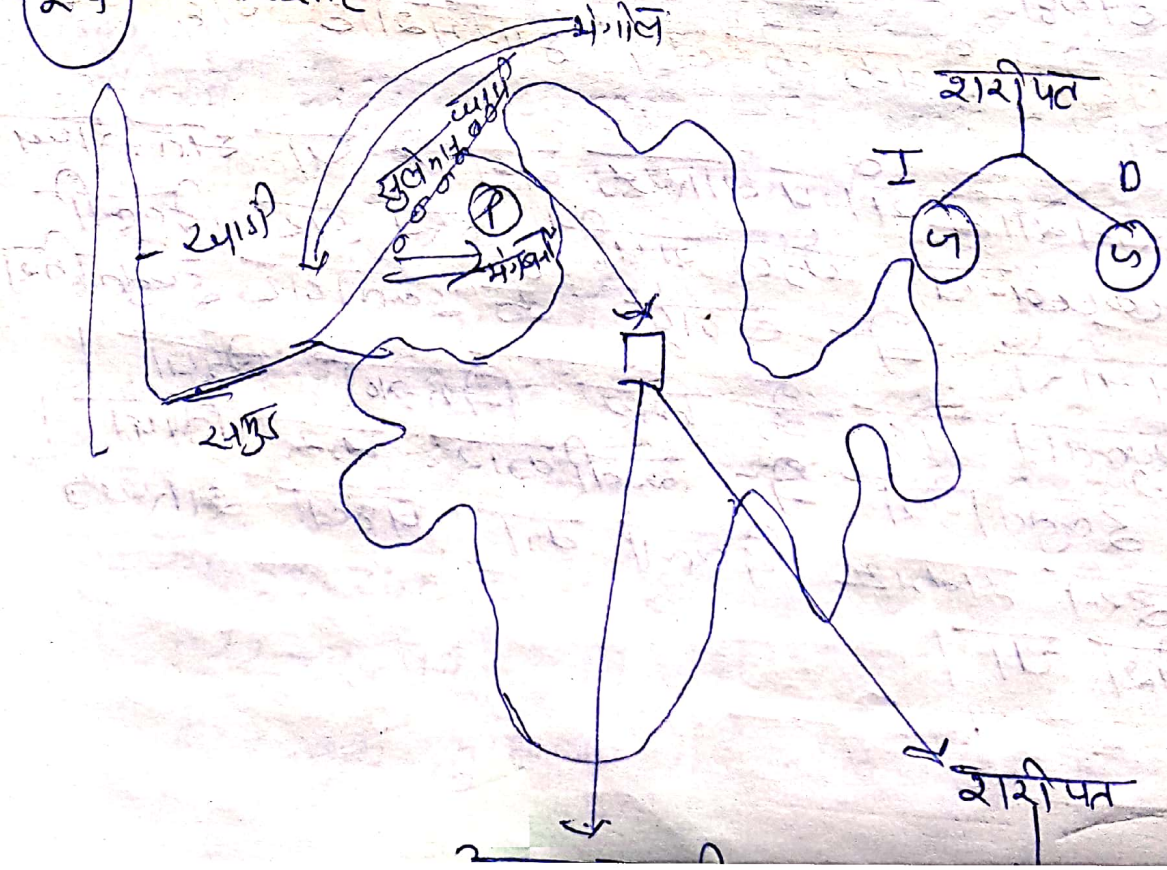

नायब-ए-ममलिकात पद
(सृजित)

» दिल्ली सल्तनत के प० एशिया और मध्य एशिया से सम्बन्धित स्थ सम्बन्ध खत्म हो गये।

» मदरसे-ए मुइज्जी स्थापित कराया एक दिल्ली में एक बदायूं

» चाँदी का टंका और ताँबे का जीतल चलाया शुद्ध अरबी सिक्के चलाये।

» तराइन का युद्ध 1215 में यल्दूज को हरा दिया था।

According to
» इतिहासकार R.P Tripathi दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक इल्तुतमिश थी।

» उक्ता व्यवस्था संगठित की।

» दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान है जिसके समय में दिल्ली सल्तनत पर मंगोल आक्रमण का खतरा मंडराया।

» चंगेज खाँ ने जब 1221 ई० में ईरान पर आक्रमण किया तो वहाँ के राजकुमार मंगबर्नी ने पंजाब में शरण ली।

» मंगोल सैनिक वहीं सीमा पर मंडराते रहे जबकि तक की 1227 में यहाँ से वापस नहीं चला गया।

». यह पहला अवसर था जब दिल्ली के किसी सुल्तान ने (इल्तुतमिश) चंगेज खाँ के सम्भावित आक्रमण के समय प० से दिल्ली सल्तनत के प० एशिया व मध्य एशिया से सम्बन्ध अलग कर दिये थे।

» दोआब के आर्थिक महत्व को पहचाने वाला शासक इल्तुतमिश था।

» इल्तुतमिश दिल्ली का पहला सुल्तान है जिसे 1229 में बगदाद के खलीफा ने खिल्लत प्रदान की थी।

» शासन की जानकारी तबकाते नासिरी से मिलती है।

Scanned with CamScanner

⇒ तबकात नासिरी पुस्तक नासिरुद्दीन महमूद को समर्पित की थी।

⇒ इल्तुतमिश ने ईरानी परम्परा से प्रेरित होकर अपनी बेटी रजिया को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया

⇒ इल्तुतमिश ने दरबार में ईरानी परम्पराओं को भी प्रोत्साहन दिया था।

Note:- इल्तुतमिश के बाद दिल्ली का सुल्तान ~~रु~~ रुकनुद्दीन फिरोजशाह बना।

⇒ रजिया इस निर्णय से खुश नहीं थी अतः जब रुकनुद्दीन फिरोजशाह राजधानी से बाहर था तो रजिया ने नमाज के समय लाल वस्त्र पहनकर दिल्ली की जनता से न्याय की माँग की। जनता ने रजिया का साथ दिया। शाहतुर्कान को कैद कर हत्या कर दी गयी और सत्ता परिवर्तन हो गया।

⇒ अब दिल्ली की सुल्तान रजिया बेगम हो गयी।

Note:- Delhi sultant में first and last chance था जब दिल्ली का सुल्तान लोकतांत्रिक रूप से बना।

⇒ Delhi Saltnat की first and last women Solutan थी Razia Bagam।

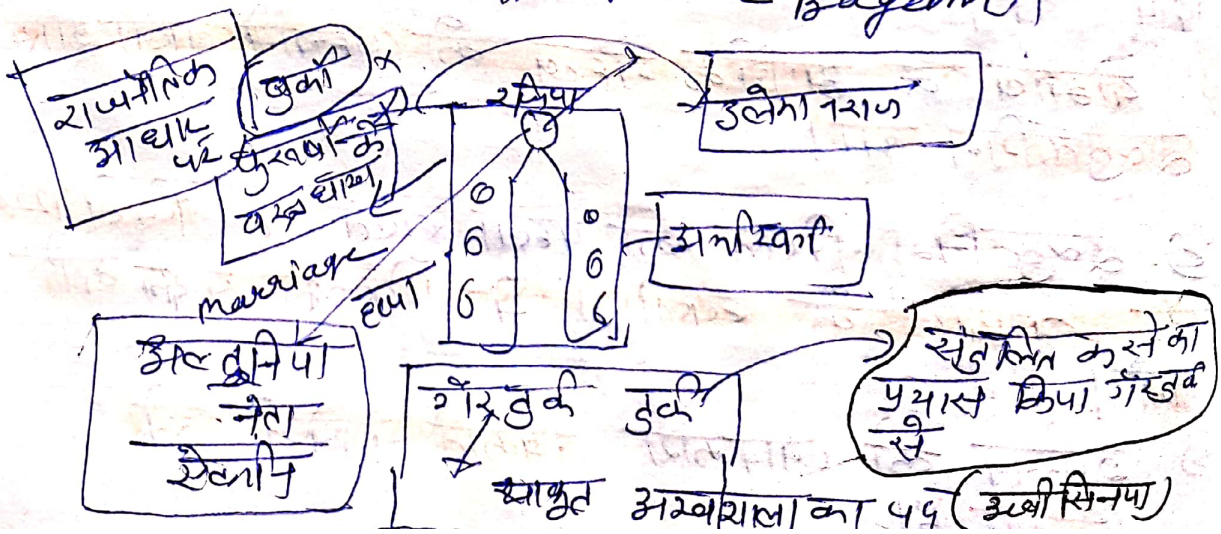

→ बहरामशाह को गद्दी पर इस शर्त पर बैठाया गया कि यह नायब मुमलकात के पद का गठन करके Sultan की all power इसे Transfer कर दे। और फिर इस पद पर षड्यन्त्रकारियों का नेता ऐतगीन बैठाया गया।

बहरामशाह [1240-42 ई०] —

→ दिल्ली में लाल महल में सिंहासन पर बैठा।

→ नायब-ए-मुमलकात का पद गठित किया।

→ इसके समय में 1241 ई० में तामर के नेतृत्व में मंगोलों ने भारत पर आक्रमण किया।

अलाउद्दीन मसूद शाह [1242-46 ई०]

नासिरुद्दीन महमूद [1246-65 ई०]

→ इल्बारी वंश का अन्तिम सुल्तान।

→ मिनहाज-उस-सिराज ने इसे दिल्ली का आदर्श सुल्तान बताया है।

→ यह एक सुलेखक था। और कुरान की आयतें लिखकर तथा उन्हें बेचकर अपना खर्च चलाता था।

→ बलबन का उत्कर्ष इसी के काल में हुआ।

→ बलबन ने अपनी पुत्री का विवाह नासिरुद्दीन महमूद के साथ कर अपनी स्थिति सुदृढ़ की।

→ सुल्तान ने इसे नायब-ए-मुमलकत का पद तथा उलगू खाँ की उपाधि प्रदान की।

→ इसी काल में बलबन का मुख्य प्रतिद्वन्दी इमादुद्दीन रैहान था। यह भारतीय मुसलमानों का नेता था।

→ इसका दूसरा प्रतिद्वन्दी तुर्क सरकार कुतलुग खाँ था।

⇒ बलबन ने नासिरुद्दीन महमूद के समय में शक्ति पर इतना नियन्त्रण स्थापित कर लिया था कि जब बलबन ने 1266 में इल्बारी वंश के स्थान पर स्वयं सुल्तान का पद धारण किया तो किसी को कोई आश्चर्य नहीं हुआ।

Scanned with CamScanner

ग्यासुद्दीन बलबन [1266-1287 ई०]

- मूल नाम - बहाउद्दीन।
- बलबन जिस समय गद्दी पर बैठा सुल्तान पद की गरिमा निम्न स्थिति में थी और वास्तविक शक्ति चालीसा के पास थी। अतः बलबन ने सर्वप्रथम चालीसा को विखण्डित किया ताकि शक्ति पुनः सुल्तान पद में निहित हो सके।

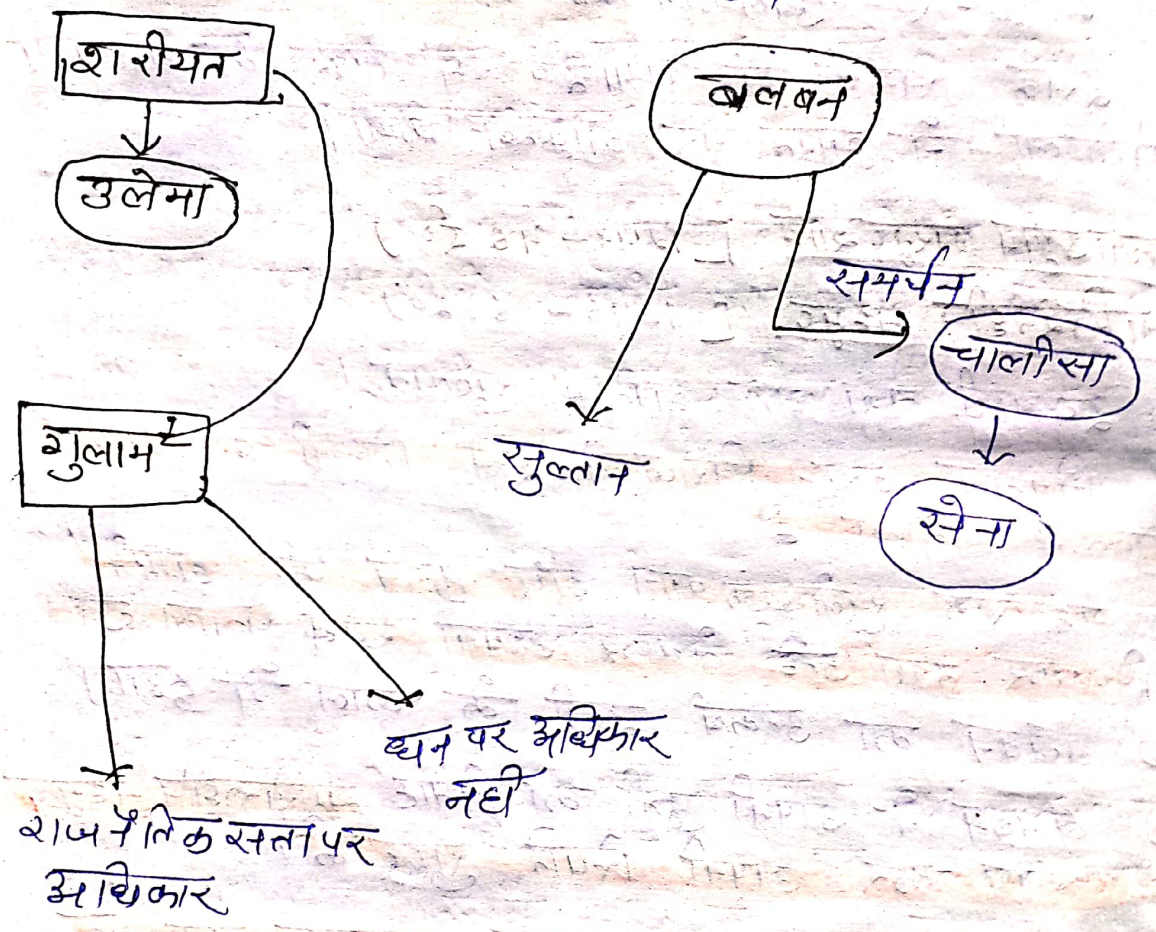

- बलबन पर दो आरोप लगाए गए -
  (1) इल्तुतमिश के वंशजों की हत्या
  (2) निम्न कुल का शासक।
- बलबन ने स्वयं को इन आरोपों से मुक्त करने के लिए स्वयं को अफरासियाब वंश का वंशज घोषित किया क्योंकि ईरान का पौराणिक वंश था।

राजत्व सिद्धान्त

- अर्द्धदैवीय सत्ता
- निरंकुश शासन
- निष्पक्ष न्याय

1) बलबन दिल्ली का पहला सुल्तान है जिसने राजत्व सिद्धान्त प्रतिपादित किया। राजत्व सिद्धान्त शासन चलाने के नियम।

2) जिल्ले इलाही (ईश्वर की प्रतिछाया) की उपाधि धारण की स्वयं ले।

3) बलबन की नीति लौह एवं रक्त की नीति थी।

4) बलबन ~~की नीति~~ यह सिद्ध करने के लिए कि वह उच्च कुल से है वह हमेशा कहता था- निम्न जाति के व्यक्ति को देखकर मेरा खून खौलने लगता है और मेरा हाथ तलवार पर चला जाता है।

5) बलबन पहला सुल्तान था जिसने सैन्य विभाग स्थापित किया- दीवाने-ए-अर्ज
↓ मुख्य अधिकारी
आरिज-ए-मुमालिक।

6) बलबन पहला दिल्ली का सुल्तान था जिसने मंगोलों के आक्रमणों को प्रतिसंतुलित करने के लिए पश्चिमोत्तर क्षेत्र में सीमा चौकी और दुर्गों की श्रृंखला स्थापित करायी थी।

7) तुगरिल खाँ का विद्रोह- बंगाल में बलबन के विरुद्ध 1279 में बंगाल अभियान बलबन का एकमात्र ऐसा अभियान है, जिसका नेतृत्व बलबन ने दिल्ली से बाहर जाकर किया।

8) 1285 में बलबन का पुत्र जिसे शाहजादा घोषित किया जा चुका था- मुहम्मद मंगोलों के विरुद्ध आक्रमण करते हुए मारा गया था! इसी युद्ध के दौरान अमीर खुसरो को मंगोलों ने बन्दी बना लिया था। अमीर खुसरो ने और मीर हसन ने अपना जीवन

Scanned with CamScanner

मुहम्मद के अधीन शुरु किया। बलबन ने अपने चचेरे भाई शेरखाँ को जहर दे दिया था।

→ बलबन ने मुहम्मद की मृत्यु के बाद उसे शहीदे-ए-आजम की उपाधि दी थी।

→ बलबन ने सिजदा पैबोस की प्रथा प्रारम्भ की।

→ इसी ने अपना दरबार फारसी पद्धति पर स्थापित किया।

→ निजामी ने इसकी तुलना एक अभिनेता से की है।

→ बलबन एक मालिक होते हुए खान हो गया तथा खान के बाद सुल्तान बन गया।

→ बलबन दिल्ली का पहला सुल्तान था। जिसने अपने दरबार में गैर इस्लामी प्रथाओं का प्रचलन किया।

→ बलबन ने ईरानी त्यौहार नौरोज को अपने शासन में आरम्भ कराया था।

Note: इस तरह बलबन दिल्ली सल्तनत का दूसरा वास्तविक शासक था। इसके बाद दिल्ली का सुल्तान कैकुबाद बना।

→ बलबन का शासन अति केन्द्रित था- जो एक योग्य नेतृत्व में ही सुरक्षित था। लेकिन बलबन की मृत्यु के साथ उसके अयोग्य उत्तराधिकारी जो कठोर नियंत्रण में पले- बढ़े थे, अब नियन्त्रण मुक्त होकर सत्ता पर ध्यान नहीं दे पाए और इस प्रकार सत्ता का पतन हो गया।

Scanned with CamScanner

Note:- निजामुद्दीन औलिया के सम्बन्ध किसके खराब हुए (गियासुद्दीन तुगलक, मुबारक शाह खिलजी)

=> निजामुद्दीन औलिया जो दिल्ली के प्रमुख सूफी सन्त थे। इनके सुल्तान के साथ सम्बन्ध पहली बार मुबारक शाह खिलजी के साथ खराब हुए। यह सुल्तान इन्हें शाही आदेश के अधीन दरबार बुलाना चाहता था लेकिन निश्चित तिथि की रात सुल्तान की हत्या हुई।

=> निजामुद्दीन औलिया के सम्बन्ध गियासुद्दीन तुगलक के साथ खराब हुए लेकिन गियासुद्दीन तुगलक भी इन्हें दण्डित करने से पहले आकस्मिक मृत्यु का शिकार हो गया।

तुगलक वंश

गियासुद्दीन तुगलक (1320-25) (गाजी मलिक)

=> वारंगल (तेलंगाना राज्य) रुद्र प्रतापदेव (1321)

=> जाजनगर अभियान (उड़ीसा) भानुदेव (1324)

=> M.B.T की उपाधि (जौना खाँ) के नेतृत्व में 1321 में वारंगल अभियान किया। वारंगल को दिल्ली सल्तनत में मिलाया गया।

=> वारंगल दक्षिण का पहला राज्य है जिसे प्रत्यक्ष रूप से दिल्ली सल्तनत से जोड़ा गया।

=> बंगाल अभियान 1325:- M.B.T, अयाज अहमद शाहि इस अभियान का नेतृत्व सुल्तान ने स्वयं संभाला और दिल्ली का प्रशासन एक तीन सदस्य कौंसिल को दिया।

=> बंगाल के सफल अभियान के बाद गियासुद्दीन ने घोषणा की निजामुद्दीन औलिया उसके दिल्ली प्रवेश से पहले दिल्ली छोड़ दे इस पर औलिया ने कहा दिल्ली दूर है।

दिल्ली से 6 किलो० दूर अफगानपुर में उसकी मृत्यु हो गयी। यह लकड़ी का महल अहमद अयाज ने बनवाया था। जिसके टूटने से गियासुद्दीन की मृत्यु हो गयी।

इब्नबतूता, बदायूनी इसका घटना को षड्यन्त्रकारी मानते हैं।

गियासुद्दीन तुगलक के सुधार:- यातायात व डाक व्यवस्था को स्थापित करने वाला प्रथम शासक था।

1) सिंचाई के लिए नहरें निकलवाने वाला पहला सुल्तान।

2) खुत मुकद्दम के विशेषाधिकार अलाउद्दीन खिलजी ने छीन लिए थे। इन्हें गियासुद्दीन तुगलक ने वापस कर दिया था।

3) अलाउद्दीन की भूमि व्यवस्था को बदलकर गल्ला बटाई की व्यवस्था शुरू कर दी।

4) गियासुद्दीन तुगलक यह मानता था कि राजकीय आय में वृद्धि का अच्छा तरीका भूराजस्व में वृद्धि न करके कृषि भूमि का विस्तार करना है।

5) राजस्व वृद्धि 1/10 1/11 से अधिक नहीं बढ़ेगी।

6) यह पहला सुल्तान है जिसके काल में निर्धनों की सहायता के लिए कार्य शुरू हुए।

M.B.T (1325 - 1351)

बरनी के लेखन की महत्ता इन शब्दों में है बरनी के लेखन का विवरण किये बिना मध्यकालीन इतिहास लेखन नहीं किया जा सकता।

M.B.T के विवादास्पद कार्य

(1) दोआब में कर वृद्धि (1326)

(2) राजधानी परिवर्तन (1327) 1335 में वापस

(3) सांकेतिक मुद्रा (1329) में

(4) खुरासान अभियान (1330-31) मध्य एशिया। तरमाशरीन

(5) कराचिल अभियान (1336 - 1337)

- दीवाने - ए - कोही :- कृषि विभाग

- M.B.T सम्भवतः एकीकृत भारत का निर्माण करना चाहता था। South के राज्यों को सल्तनत के अधीन लाना चाहता था।

- लेकिन उत्तर के विद्रोह ने इस plan को फेल कर दिया (राजधानी परिवर्तन)

- विजयनगर, बहमनी राज्यों का गठन हुआ।

सांकेतिक मुद्रा :- चाँदी से निर्भरता कम करना चाहता था क्योंकि चाँदी मुख्यतः आयात की जाती थी। और इसी नीति के तहत ताँबे और काँसे की सांकेतिक मुद्रा चलायी गयी। लेकिन लोगों ने Duplicate मुद्रा से मुद्रास्फीति बढ़ा दी। यद्यपि उस समय चीन में सफल हो गयी थी जबकि ईरान में फेल हो गयी थी।

मुख्य कारण मुद्रा बनाने वाले टकसालों को शाही नियंत्रण में न रखना और उस पर कोई विशेष चिन्ह अंकित न करना। जो केवल शाही नियंत्रण

में होता हो।

→ जब सुल्तान ने 0 मुद्रा के बदले शुद्ध चाँदी की मुद्रा दी तब भी उन्होंने M.B.T को पागल कहा गया।

→ दिल्ली सल्तनत में सर्वाधिक 22 विद्रोह हुए जो आन्तरिक थे।

→ तकावी ऋण किसने जारी किये।

→ दिल्ली का पहला सुल्तान जिसने होली के त्यौहार में भाग लिया।

→ गुजरात के जैन जिनप्रभा सूरि से आधी रात तक वर्तालाप किये।

→ दिल्ली का पहला सुल्तान जो अजमेर में मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह की यात्रा करेगा।

→ U.P बहराइच स्थित सलार मसूद गाजी की दरगाह के भी दर्शन किये।

→ मरक्को निवासी इब्नबतूता M.B.T के काल में 1333 ई० में आया। 1334 में दिल्ली आया। M.B.T के समय दिल्ली का काजी नियुक्त हुआ। राजपरिवार में विवाह कराया। गबन का आरोप लगाकर दंडित किया बाद में 1342 ई० में अपने दूत के रूप में चीन भेजा।

→ दिल्ली सल्तनत में सबसे विशाल साम्राज्य M.B.T का था।

→ M.B.T ने प्रान्तों की आय व्यय का ब्यौरा तैयार करने के लिए रजिस्टर बनवाया।

Scanned with CamScanner

→ गृह कर चराई कर कठोरता से वसूला
→ M.B.T ने भूराजस्व 50% वसूला खुम्स कर लूट का माल 4/5 शाही कोष मे जमा कराया 1/5 सैनिकों में बाँटा

→ दक्षिण भारत में चिश्ती शाखा की नींव शेख बराउद्दीन ने M.B.T के काल में रखी थी।

→ सोन्धार कर भी M.B.T ने जारी किये।

→ M.B.T पहला शासक है जिसने अकाल पीड़ितों की सहायता की।

→ M.B.T दिल्ली और उसके आस पास प्लेग फैलने पर अपनी अस्थायी राजधानी स्वर्ग द्वारी कन्नौज लेकर चला गया।

→ 1336 में विजयनगर राज्य की स्थापना हुई (हरिहर, बुक्का)

→ अलाउद्दीन हसन बहमनशाह ने बहमनी राज्य की स्थापना की (1347) ई० मे। हसन गंगू

→ गुरस्शाप का विद्रोह M.B.T का चचेरे भाई) (सागर, गुलबर्गा का इक्तादार) इसने भाग कर काम्पिलय राज्यों में शरण ली। यही कर पथ राज्य विजयनगर साम्राज्य के रूप में अस्तित्व में आयेगा।

→ M.B.T की मृत्यु थट्टा सिन्ध में हुई।